गुरु और ईश्वर में भारत के युवा वर्ग की सच्ची निष्ठा हो–

प्रो **अच्युत सामंत**

यह सच है कि ईश्वर की कृपा से ही गुरु मिलते हैं और गुरु के उचित मार्गदर्शन से ही ईश्वर की कृपा हम सबको मिलती है। आज भारत के युवा वर्ग में गुरु और ईश्वर के प्रति सच्ची निष्ठा बहुत जरूरी है। उन्हें अपने गुरु के आचरण, व्यवहार, शिक्षा–दीक्षा पर पूरी तरह से भरोसा करने की आवश्यकता है। हमारे देश के युवाओं को सत्य, अहिंसा, त्याग, प्रेम, सौहार्द, उपकार, भक्ति, वीरता, धैर्य, आत्मविश्वास, आत्मबल, शौर्य, धीरज एवं कौशल आदि के उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

हमारे मन में प्रतिदिन दो प्रकार के विचार आते हैं– सकारात्मक व नकारात्मक। आवश्यक और अनावश्यक विचार। सकारात्मक विचार देश के युवाओं को भाईचारा, देशभक्ति, समाजसेवा, खुशी, प्रसन्नता, दया और प्यार आदि का संचार करते हैं जबकि नकारात्मक विचार हमारे मन में अहंकार, क्रोध, स्वार्थ, भय एवं कमजोरी पैदा करते हैं। सकारात्मक विचार से हम सब स्व–सुधार की कला अपने आप में विकसित करते हैं जबकि नकारात्मक विचार से दूसरों में हम केवल दोष ही दोष देखते हैं। हमारे मन में ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, दुराचार आदि का आविर्भाव हो जाता है। हर दिन के लिये, अच्छे कार्यों के लिये चयनित विचार आवश्यक विचार होते हैं और बीते हुये कल के विचार अनावश्यक विचार कहलाते हैं।

हमारे देश के युवा वर्ग को अपने जीवन में सफल होने के लिये सही ज्ञान एवं सही कौशल की आवश्यकता है और यह काम एक सच्चा गुरु ही कर सकता है। उनकी शरण जाने से उनका उचित मार्गदर्शन ही कर सकता है। आप सब जानते हैं कि जिस प्रकार एक छोटे–से बीज में विशालकाय वृक्ष बनने की क्षमता होती है लेकिन जब तक उस बीज को एक कुशल माली नहीं मिलता, तब तक वह बीज अंकुरित नहीं होता, विकसित नहीं होता। उसमें फल–फूल नहीं लगता। गुरु का काम भी एक कुशल माली के जैसा ही है। सच ही कहा गया है कि–

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।

सीस दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

निर्गुण ब्रह्म के उपासक कबीरदासजी ने तो यहाँ तक कह दिया कि –

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागो पाय।

बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दियो बताय।।

एक दूरदर्शी विचारों वाला कुशल गुरु वास्तव में कुम्हार के जैसा ही होता है–

गुरु कुम्हार शिशु कुम्भ है, गढ़ि–गढ़ि काढ़े खोट।

भीतर हाथ सहार दै, बाहर–बाहर चोट।।

आज हमारे देश के युवा साथियों को ऐसे ही गुरु की आवश्यकता है। बचपन में डॉ. अच्युत सामंत जी के तीन गुरु हुआ करते थे। पहली गुरु उनकी माँ थी, जिसके कठोर अनुशासन में आज वे इस मुकाम तक पहुँचे हैं। दूसरे गुरु उनके आदरणीय श्रीमान नृसिंह चरण नायकजी हैं जिन्होंने उनका नामकरण 'अच्युतानंद' किया। तीसरे गुरु उनके समस्त गुरुजन वृंद हैं जिन्होंने उनको पढ़ाकर एक अच्छा इंसान बनाया। वे बचपन से ही सरल, मृदुल, सौम्य एवं हंसमुख रहे हैं। आज भी ये सब कुछ उनकी अपनी व्यक्तिगत अमानत हैं। वे सबके अन्दर सिर्फ अच्छाई को ही देखते हैं। आज सामन्त जी को चाहने वाले उन्हें 'दिव्य पुरुष' कहते हैं। 'आलोक पुरुष' मानते हैं। 'जीवित मसीहा' कहते हैं। आज वे लगभग 10 लाख लोगों का प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से एकमात्र सहारा कहलाते हैं। आप सब भारत के समस्त युवा वर्ग के साथियों से उनका यह विनम्र निवेदन है कि एक बार आप कीट–कीस का अवश्य परिभ्रमण करें। आपको बिना बताये गुरु और ईश्वर की सच्ची निष्ठा का प्रमाण अवश्य मिल जाएगा।

जय जगन्नाथ!